प्राक्कथन Introduction

राष्ट्र के जीवन में उसके अपने इतिहास का महत्व अपरिमेय है । इतिहास उसे अपने महिमामय उत्तराधिकार से परिचित करता है अेवं आत्म-गौरव की भावना से समन्वित । " इतिहास " से अपने नव्य रूप में अेक देश या उसके युग विशेष की समग्र चेतना की अभिव्यक्ति अपेक्षित है । किन्तु तथ्योन्मुखता के कारण उसके इस प्रयत्न में भी बहुत कुछ अनकहा रह जाता है । प्रत्येक देश युग विशेष के व्यक्तियों की अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक अेवं राजनीतिक व्यवस्था होती है तथा उसके सामाजिकों के अपने आचरण, सिद्धान्त अेवं अपनी विचार धाराअें होती हैं । इनकी यथार्थ अेवं जीवन्त अभिव्यक्ति इतिहास में संभव नहीं, अतः जन सामान्य सम्यक् इतिहास-बोध अेवं इतिहास की जीवंत अनुभूति से वंचित रह जाता है । इतिहास की इस न्यूनता का परिहार अैतिहासिक उपन्यास करता है । वह अपने अैतिहासिक तथ्य और कल्पना के समन्वय द्वारा अपनी विषय-वस्तु अेवं देश-काल के सम्यक् चित्रण से पाठकों को गृहीत युग की अैतिहासिक रसानुभूति करा उनके अैतिहासिक-बोध में सहायभूत होता है । इतिहास सत्य (तथ्य) का बोध कराता है, और अैतिहासिक उपन्यास उस सत्य को सौंदर्य से मंडित कर पाठकों के लिये शिवान्वित बनाता है, अर्थात् अैतिहासिक उपन्यास पाठकों को अतीत की उपलब्धियों अेवं त्रुटियों के प्रति प्रबुद्ध करके अेवं वर्तमान के प्रति उन्हें जागरूक रख, वर्तमान और भविष्य दोनों के सुधार की दिशाअें इंगित करता है । इस प्रकार इतिहास और कला के समन्वित रूप-अैतिहासिक उपन्यास का जन-जीवन की मानसिक सन्नद्धता अेवं उसके उत्थान में अत्यंत महत्पूर्ण योगदान है । अैसे साहित्यांग, अैतिहासिक उपन्यास, का अध्ययन साहित्यिक, सामाजिक, अेवं राष्ट्रीय दृष्टि से बहुत ही उपयोगी अेवं आवश्यक है ।

आधुनिक युग में हिन्दी के साथ-साथ अन्य प्रादेशिक भाषाओं के साहित्य की विविध प्रवृतियाँ भी काफी पल्लवित हुईं । गुजराती साहित्य में भी हिन्दी की भाँति काव्य और कथा साहित्य की परम्पराअें काफी समृद्ध हैं । इनका तुलनात्मक अध्ययन साहित्यिक और भाषाकीय दृष्टि से सर्जन की कई प्रक्रियाओं को प्रकाश में लाता है । हिन्दी और गुजराती में के कृष्ण काव्य पर तथा भारतेन्दु और नर्मद पर तुलनात्मक अध्ययन हो गया हैं । हिन्दी और गुजराती में अैतिहासिक उपन्यास की विधा भी काफी समृद्ध है और इसके क्षेत्र में प्रमुख उपन्यासकार श्री वृन्दावन लाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री तथा श्री कन्हैयालाल माणेकलाल मुंशी से सम्बन्धित व्यक्तिपरक अध्ययन हो चुके हैं, तथा हिन्दी में अैतिहासिक उपन्यास की परम्परा को लेकर श्री गोविंदराम शर्मा अेवं रामनारायण सिंह मधुर तथा श्री मदन मोहन दुबे ने अपने-अपने अध्ययन प्रस्तुत किये हैं। ~~[illegible]~~ हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों ने ~~[illegible]~~ प्रस्तुत अनुशीलन ~~[illegible]~~ तुलनात्मक अध्ययन की दिशा में अेक लघु प्रयास है ।

विषय का स्पष्टीकरण :-

हिन्दी और गुजराती, दोनों भाषाओं के साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यास अपने समुत्कृष्ट रूप में विद्यमान है । इन दोनों भाषाओं में इनके विकास के दो सोपान यत्किंचित अन्तर से दृष्टिगत होते हैं । प्रयोग-काल की रचनाओं में ऐतिहासिक उपन्यास अपने कतिपय स्खलनों से गिरता-उठता अेवं गतिमान होता दिखाई देता है । इसके अनन्तर दोनों भाषाओं में डॉ० वृन्दावन लाल वर्मा अेवं श्री क. मा. मुंशी के आगमन से वह समुचित विकास को प्राप्त होता है । इस विकास-काल में लिखे गये हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों की संख्या भी विपुल है । अतः गृहीत अध्ययन के लिये उन्हें समग्र रूप में ले लेना न तो संभव ही लगा और न ही उनके प्रति न्यायोचित । अतःअेव पूर्व निर्दिष्ट दृष्टि से समीचीन अध्ययन करने के लिये हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासकारों की प्रातिनिधिक रचनाओं को ही प्रस्तुत अध्ययन में अंगीकृत किया गया है ।

ज्ञान के विस्तार में प्रस्तुत अध्ययन का योगदान :-

विवेचन गत सुविधा के विचार से प्रस्तुत शोधकार्य को आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं ।

प्रथम अध्याय ऐतिहासिक उपन्यास के सिद्धान्त पक्ष से सम्बद्ध है । इस में इतिहास, उपन्यास अेवं ऐतिहासिक उपन्यास के सम्बन्ध में उनका सैद्धान्तिक परिचय प्रस्तुत किया गया है । सर्व प्रथम " इतिहास " शब्द की व्युत्पत्ति अेवं तज्जन्य विभिन्न अर्थों पर विचार करने के पश्चात् विभिन्न ऐतिहासिक धारणाओं का अनुशीलन करते हुअे निजी निष्कर्ष दिये गये हैं । इतिहास के विषय में भारतीय और पाश्चात्य अवधारणाओं के अनुशीलन और विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत कर उपन्यास के तत्वों का अनुशीलन किया गया है । उपन्यास पर इस संक्षिप्त विचार के पश्चात् ऐतिहासिक उपन्यास और इतिहास सम्बन्धी तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है । ऐतिहासिक उपन्यास ऐतिहासिक तथ्य और औपन्यासिक कला दोनों का संतुलित संयोजन है, जबकि इतिहास स्वयं को प्रामाणिक तथ्यों की अभिव्यक्ति तक ही सीमित रखता है । इतिहास के नीरस तथ्य, निर्जीव पात्र, अेवं शून्य वातावरण, ऐतिहासिक उपन्यास में सरस, सजीव और सप्राण हो उठते हैं । ऐतिहासिक उपन्यास के सम्बन्ध में भारतीय तथा पाश्चात्य विवेचकों के मतों को प्रस्तुत करने के साथ-साथ ऐतिहासिक उपन्यासकारों के मतों का आकलन करके इस विधा के स्पष्टीकरण का प्रयास किया गया है और अंत में ऐतिहासिक उपन्यास के कथावस्तु, पात्र और चरित्र-चित्रण तथा वातावरण सम्बन्धी ऐतिहासिक तथ्य अेवं उनके कलात्मक संयोजन के अनुपात के आधार पर ऐतिहासिक उपन्यासों का समुचित वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है । प्रस्तुत विवेचन में विद्वानों के विवेचन से सहायता ली गई है, किन्तु अध्ययन-गत निष्कर्ष लेखक का अपना निजी प्रयास है ।

द्वितीय अध्याय में हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा प्रस्तुत है । शिल्प की दृष्टि से हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों का विकास आरंभिक युग (१८९०-१९२८ ई०) और विकास युग (१९२९ से अब तक) इस दो युगों में विभाजित किया गया है । आरंभिक युग के ऐतिहासिक उपन्यासकारों में अेक वर्ग ऐतिहासिक उपन्यास में कल्पना को अधिक महत्व देता है, इतिहास का वहाँ अेक झीना आवरण मात्र है । दूसरे वर्ग के लेखकों ने अपने उपन्यासों में कल्पना की अपेक्षा इतिहास को अपेक्षाकृत प्रश्रय दिया है । इन अेकांगी धारणाओं के परिणाम स्वरूप ऐतिहासिक उपन्यास विकास युग में संतुलित और सुविकसित स्वरूप को प्राप्त होता है । विकास युग के ऐतिहासिक उपन्यासकारों की रचनाओं का अध्ययन भी हमें दो प्रकार के ऐतिहासिक उपन्यासकारों का परिचय कराता है । प्रथम वर्ग में विशुद्ध ऐतिहासिक उपन्यास के दृष्टिकोण को लक्ष्य में रख कर रचना करने वाले ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं, तो द्वितीय वर्ग में वाद-विशेष के दृष्टि-कोण के अनुसार रचना करने वाले कृतिकार हैं । इनके अपने विचार-दर्शन और दृष्टि-बिंदु के अनुसार इनकी कृतियों का विषय गत और शिल्पगत स्वरूप भी प्रभावित हुआ है । प्रथम वर्ग के ऐतिहासिक उपन्यासों में ऐतिहासिक उपन्यास की कला का उत्कृष्ट स्वरूप दृष्टिगत होता है, जबकि द्वितीय वर्ग की रचनाओं में उसका स्तर अपेक्षाकृत न्यून है । रचनागत उद्देश्य की दृष्टि से भी प्रथम वर्ग के उपन्यासों में अतीत के गौरव के चित्रण द्वारा राष्ट्रीय अभ्युदय की भावना क्रियाशील है, तो द्वितीय वर्ग की कृतियों में राज्यतंत्र और अध्यात्मवाद का खण्डन कर समाजवादी व्यवस्था का प्रचार है । इस युग के लेखकों की सामुदायिक साधना के परिणाम स्वरूप हिन्दी का ऐतिहासिक उपन्यास भी भारतीय साहित्य में गौरवास्पद स्थान का अधिकारी है । यह विवेचन सम्पूर्णतया लेखक का निजी प्रयास है , जिसकी आधारभूत सामग्री आलोच्य कृतियों से प्राप्त की गयी है ।

तृतीय अध्याय, में गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यास की परम्परा प्रस्तुत की गई है । गुजराती साहित्य में उपन्यास-साहित्य का आरंभ ही ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना से हुआ । शिल्प की दृष्टि से श्री क. मा. मुंशी के पूर्व के ऐतिहासिक उपन्यास प्रयोगावस्था का स्वरूप प्रस्तुत करते हैं । श्री मुंशी के " पाटण-त्रयी " में ऐतिहासिक उपन्यास अपना वास्तविक स्वरूप प्राप्त करता है । यहाँ आरंभिक युग १८६६ से १९१५ पर्यंत है अेवं विकास युग १९१६ से अब तक । गुजराती साहित्य में भी आरंभिक युग के ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना का उन्मुक्त प्रयोग हुआ है अेवं ऐतिहासिक तथ्यों का प्रयोग पृष्ठभूमि में वातावरण का आभास मात्र कराने के लिये हुआ है, अतः ऐति-हासिक उपन्यास की अपेक्षा ऐतिहासिक रोमांस के अधिक निकट हैं । सुधारवादी दृष्टि और कल्पनाधिक्य के प्रयोग से इस युग के ऐतिहासिक उपन्यास शिल्प की दृष्टि से साधारण कोटि के हैं । विकास युग के ऐतिहासिक उपन्यासकार भी इतिहास के प्रति काफी उदार दृष्टिकोण वाले रहे हैं अतः उनकी कृतियों में कल्पना का प्राचुर्य है । मुख्य-तया गुजरात का मध्यकालीन इतिहास इस युग के उपन्यासकारों की रचनाओं का प्रिय विषय रहा है, अवंति और मगध के राजवंशों के इतिहास का भी कतिपय उपन्यासों में

आधार ग्रहण किया गया है । कला की दृष्टि से ऐतिहासिक उपन्यास श्री मुंशी में उत्कृष्ट स्वरुप को प्राप्त होता है अेवं उनके परवर्ती समस्त उपन्यासकारों ने उन्हीं का अनुसरण किया है । इस युग की रचनाओं में अेक और गुजरात की जनता को गुजरात के गौरव और उसके सांस्कृतिक आदर्शों से परिचित किया है, तो दूसरी ओर उसे जीवनोपयोगी समृद्ध संस्कार-सम्बल भी प्रदान किया है । गुजराती साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा आज क्षीण प्रायः हो गई है । अन्त में हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्पराओं का विहंगावलोकन किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय हिन्दी और गुजराती के विशुद्ध ऐतिहासिक उपन्यासों के अध्ययन से सम्बद्ध है । इतिहास और कला दोनों दृष्टियों से संतुलित विशुद्ध ऐतिहासिक उपन्यास स्वल्प हैं । हिन्दी और गुजराती में दो दो-तीन तीन कृतियाँ इस दिशा में प्राप्य हैं ।

ये उपन्यास ऐतिहासिक सत्य की पूर्णतया रक्षा करते हुअे देश और काल के अनुरुप उपन्यास कला के यथोचित विनियोजन का साक्ष्य उपस्थित करते हैं । इस कोटि में आने वाले हिन्दी और गुजराती के उपन्यासों में कल्पना का प्रयोग केवल कथावस्तु को प्रभावशाली ढंग से रखने में ही हुआ है । प्रस्तुत अनुशीलन द्वारा लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि विशुद्ध ऐतिहासिक उपन्यास दोनों ही साहित्यों की परंपरा में अत्यल्प संख्या में लिखे गये हैं । ऐतिहासिक तथ्य मात्र के अनुशीलन से कलात्मक अभिव्यंजना का सौष्ठव बाधित भी हो सकता है और संभवतः यही कारण है कि इस प्रकार का प्रयास कम ही हुआ है । यह विवेचन लेखक का सर्वथा मौलिक प्रयास है ।

पंचम अध्याय समन्वयान्वित ऐतिहासिक उपन्यासों के अनुशीलन से सम्बन्धित है । इस कोटि में आने वाले उपन्यासों में प्रयुक्त कथावस्तु और पात्रों में ऐतिहासिक तथ्य और कल्पनाप्रसूत अंश के समन्वय को लक्ष्य में रखा गया है । इनमें उपन्यासकारों ने न तो ऐतिहासिकता के अत्याग्रह के कारण कल्पना की उपेक्षा ही की है और न ऐतिहासिक कल्पना को इतना असंतुलित होने दिया है कि उससे इन उपन्यासों के वस्तु-पात्र की ऐतिहासिकता बाधित हो । अैसे उपन्यासों में कल्पना का यह यथावश्यक और संतुलित प्रयोग उनकी कथावस्तु को ऐतिहासिक दृष्टि से प्रतीतिकर बनाने के साथ लेखक को अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिये आवश्यक घटना-प्रसंग और पात्र-सृष्टि के लिये भी पर्याप्त अवकाश प्रदान करता है । इसीलिये प्रस्तुत अध्याय में सांस्कृतिक निरूपण, सिद्धान्त-प्रतिपादन, मनोविश्लेषणात्मक तथा शुद्ध ऐतिहासिक दृष्टिकोण से लिखे गये कतिपय-प्रतिनिधि उपन्यासों का ,अध्ययन अंगीकृत किया गया है । उनकी ऐतिहासिकता का विचार करते समय काल्पनिक कथावस्तु के अंश और उसकी उपयोगिता की ओर इंगित किया गया है । इन उपन्यासों की पात्र सृष्टि भी जीवन के लगभग समग्र क्षेत्र को आवृत कर लेती है । इस प्रकार इस वर्ग के हिन्दी के अधिकांश उपन्यास अपने समय के वातावरण का समग्र और गुजराती के अधिकांश उपन्यास अपने देश-काल के सम्बद्ध पक्ष का चित्र प्रस्तुत करते हैं । प्रस्तुत अनुशीलन से प्राप्त होने वाले उपर्युक्त निष्कर्षों के अतिरिक्त यह उल्लेखनीय है कि इस कोटि की रचनाअें हिन्दी और गुजराती साहित्य

में सर्वाधिक प्राप्त हैं जैसाकि आरंभ में निर्दिष्ट किया जा चुका है । प्रस्तुत अध्याय में हिन्दी और गुजराती की ११-११ रचनाओं पर ही विचार किया गया है । इस विवेचन का आधार, इस वर्ग की हिन्दी और गुजराती की कृतियाँ हैं और उनका समीक्षात्मक विवेचन लेखक का निजी प्रयत्न ।

षष्ठ अध्याय में हिन्दी और गुजराती के वातावरण प्रधान ऐतिहासिक उपन्यासों का अनुशीलन किया गया है । इतिहास की दृष्टि से इस कोटि के उपन्यासों का भले ही कोई महत्व न हो किन्तु इन में चित्रित ऐतिहासिक वातावरण उपन्यास-कला की आभा से इस प्रकार दीपित हो उठा है कि उनकी कथावस्तु सजीव और विश्वसनीय प्रतीत होती है । इनमें लेखक को वातावरण के अनुरुप, घटना-प्रसंग और पात्र-सृष्टि के लिये समन्वयान्वित ऐतिहासिक उपन्यासों की अपेक्षा अधिक अवकाश है । अतः इस कोटि की रचनाओं में लेखकों ने अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिये कल्पनाप्रसूत उपयुक्त कथावस्तु और पात्र-सृष्टि का आश्रय लिया है । ऐसी रचनाओं की संख्या समन्वयान्वित ऐतिहासिक उपन्यासों की तुलना में कम है । किन्तु गुणवत्ता की दृष्टि से हिन्दी और गुजराती की उपन्यास-परंपरा में इन रचनाओं का महत्व अनुपेक्षणीय है । इस वर्ग में आने वाली कतिपय हिन्दी और गुजराती की रचनाओं के विस्तृत विवेचन द्वारा लेखक उपर्युक्त निष्कर्षों को प्रस्तुत कर सका है । ऐतिहासिकता के स्पष्टीकरण के लिये इस में आवश्यकतानुसार ऐतिहासिक ग्रन्थों की सहायता ली गई है, किन्तु लेखक ने अपने स्वतंत्र निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं ।

सप्तम अध्याय हिन्दी और गुजराती के कल्पना-प्रधान ऐतिहासिक उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन से सम्बद्ध है । पूर्ववर्ती वर्ग की तुलना में इस में आने वाली रचनाएँ कम हैं । इस में आने वाली कतिपय रचनाओं का ऐतिहासिक दृष्टि से अनुशीलन और परीक्षण किया गया है जिसके द्वारा लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि इनमें कल्पना का इतना प्रचुर प्रयोग है कि उसके सामने ऐतिहासिकता अत्यन्त निर्बल और नगण्य सी प्रतीत होने लगती है । ऐतिहासिकता वहाँ आभास मात्र प्रतीत होती है । इसका किंचित् अपवाद अेक मात्र अपवाद " बाजीराव " की कथावस्तु है । प्रस्तुत वर्ग के हिन्दी के उपन्यासों में ऐतिहासिक कल्पना का प्रयोग अपने सिद्धान्तों के प्रतिपादन की दृष्टि से किया गया है, जबकि गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों में लेखकों ने शिल्पगत उद्देश्य से प्रेरित होकर उसका प्रयोग किया है ।

अष्टम अध्याय उपसंहारात्मक है । इसमें हिन्दी और गुजराती में प्राप्त इस समृद्ध साहित्य विधा का समग्रतया मूल्यांकन किया गया है । प्राप्त निष्कर्षों के आकलन द्वारा लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि जिस प्रकार हिन्दी में वृन्दावन लाल वर्मा के बाद में ऐतिहासिक उपन्यासों की समृद्ध परंपरा का सूत्रपात होता है ठीक इसी प्रकार गुजराती साहित्य में श्री क. मा. मुंशी के व्यक्तित्व को ऐतिहासिक महत्व प्राप्त है । इससे इस संभावना को भी बल मिलता है कि परवर्ती उपन्यास लेखकों ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखते समय इनके साहित्य को बहुत कुछ अपने सामने रखा है । वैसे परवर्ती युग

में अनेक ऐसी रचनाएँ भी मिलती हैं जो नितान्त अभिनव कला चेतना के साक्ष्य उपस्थित करती हैं । इस दृष्टिकोण से "बाण भट्ट की आत्मकथा," " चारुचन्द्र लेख," " दिव्या " जैसी हिन्दी की और " पृथिवी वल्लभ," तथा " दीप निर्वाण " जैसी गुजराती की कृतियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा अभी गतिशील है, जबकि गुजराती की ऐसी ऐतद्विध साहित्य धारा आज अवरुद्ध दिखाई पड़ती है ।

विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों पर समसामायिक उपन्यास-साहित्य की विविध-प्रवृतियों का प्रभाव भी दृष्टिगत होता है । हिन्दी के कतिपय ऐतिहासिक उपन्यास समाजवादी प्रवृत्ति से प्रभावित हैं, तो गुजराती के कुछ उपन्यास मनोविश्लेषणात्मक प्रवृत्ति से ।

इसके अतिरिक्त हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास युग-बोध और यथार्थ की चेतना से सम्पृक्त हैं, जबकि गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यास ऐतिहासिक रस की सृष्टि तक ही परिसीमित हैं ।

भारतीय साहित्य में वस्तुगत और कलागत समानता पर अलग-अलग भाषाओं की साहित्य परम्परा के निजी वैशिष्ट्य हैं एवं कलात्मक संयोजन के विविध रूप इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्रकाश में आते हैं और अधिकारी विद्वानों द्वारा लाये जा रहे है । हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों का यह अनुशीलन उक्त दिशा में किया गया एक लघु प्रयास मात्र है । अनेक नये तथ्यों की उपलब्धि के बाद भी लेखक का नम्र विश्वास है कि उक्त दिशा में सूक्ष्म एवं गवेषणात्मक अध्ययन अनेक रोचक एवं महत्व पूर्ण तथ्यों को प्रकाश में ला सकेंगे ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के लिये सहदयता एवं अनुग्रहण पूर्ण मार्ग-दर्शन श्रद्धेय डॉ० मदन गोपाल गुप्त का रहा है । आपने न केवल मुझे अनुसंधान की प्रक्रिया एवं तद्विषयक आवश्यक निर्देशन प्रदान किया, अपितु यथावश्यक विविध विश्व विद्यालयों के विद्वानों के साक्षात्कार एवं ग्रन्थों के अध्ययनार्थ पत्रों द्वारा भी सतत मार्ग-दर्शन प्रदान कर एवं प्रस्तुत शोध प्रबंध को अक्षरशः पढ़ कर अपनी शोध-विषयक निष्ठा एवं आत्मीय स्नेह से मुझे अभिसिंचित किया है । आपके इस सन्निष्ठ एवं स्नेहपूर्ण निर्देशन के परिणाम-स्वरूप ही यह प्रबंध इस रूपमें प्रस्तुत हो सका है । आपके इस अनुग्रह के लिये कृतज्ञताभिव्यक्ति द्वारा भी मैं ऋणमुक्तता की अनुभूति नहीं कर सकता ।

शोध-कार्य की गतिशीलता में डॉ० बंशीधर शर्मा प्राध्यापक हिन्दी विभाग, म० स० विश्व विद्यालय बड़ौदा, ने आवश्यक विचार-विमर्श एवं उपयोगी सुझावों द्वारा मुझे सक्रिय सहयोग दे उपकृत किया है । रामनारयण रुइया कॉलेज, बम्बई, के हिन्दी विभाग के डा० देवेश ठाकुर को इस शोध-कार्य के लिये मुझे प्रस्तुत करने एवं इसकी पूर्णतार्थ लिये प्रोत्साहन के लिये भुलाया नहीं जा सकता ।

इनके अतिरिक्त प्राच्य विद्या मंदिर के निर्देशक डा० भोगीलाल सांडेसरा एवं गुजराती विभाग के प्राध्यापक डा० सुरेश जोशी ने [redacted] भी गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों सम्बन्धी आवश्यक मार्ग-दर्शन प्रदान कर मुझे अनुगृहीत किया है।